



७. श्री कालरात्रि स्तोत्रं (नवदुर्गेशु सप्तम दुर्गा)

एकवेणी जपाकर्णपुरा नाना खरा स्थिता | लम्बोष्ठीकाणका कर्णी तैलाभ्य शरीरिणी ||
वामपदोल्लसल्लोहलता कण्टक भूषणा | वर्धनर्मध्वजा कृष्णां कालरात्रि भयगरी ||

ध्यानं

कराल वदनां घोरां मुक्तकेशीं चतुर्भुताम् |
कालरात्रिं करालिका दिव्यां विद्युत्माला विभूषिताम् || १ ||

दिव्य लौहवज्र खड्ग वामाघोर्ध्व कराम्बुजाम् |
अभयं वरदां चैव दक्षिणो ध्वाघःपाणिकाम् || २ ||

महामेघ प्रभांश्यामां तथा चैपगर्दभारूढां |
घोरदंष्टाकारा लास्यां पीनोन्नत पयोधराम् || ३ ||

सुख प्रसन्न वदना स्मेरान सरोरूहाम् |
एवं संचियन्तये त्कालरात्रिं सर्व काम समृद्धिधदाम् || ४ ||

स्तोत्रं

हीं कालरात्रि श्रीं कराली चकलीं कल्याणी कलावती |
कालमाता कलिदर्पधनी कमर्दीश कृपान्विता || ५ ||

कामबीज जपान्दा कामबीज स्वरूपिणी |
कुमतिघनीकुलीनार्ति नाशिनी कुल कामिनी || ६ ||





कलींही श्री मंत्रवर्णेन कालकण्ठकघातिनी ।
कृपामयी कृपाधारा कृपापारा कृपागमा ॥ ७ ॥

कवचं

ॐ क्लीं में हृदयं पातु पादौ श्रीं कालरात्रि ।
ललाटे सततं पातु दुष्टग्रह निवारिणी ॥ ८ ॥
रसनां पातु कौमारी भैरवी चक्षुणो र्मम ।
कहौ पृष्ठे महेशानी कर्णो शंकर भामिनी ॥ ९ ॥
वांजतानितु स्थानाभि यानि च कवचेनहि ।
तानि सर्वाणिमें देवी सततं पातु स्तम्भिनी ॥ १० ॥

इति श्री कालरात्री स्तोत्रं सम्पूर्णं

